उर्वरा सर्वतो भूमि

डॉ. शंकर दयाल भारद्वाज

इतिहास लेखन के धूमिल अंतरिक्ष में अतीत की दृष्टि बहुत ही धूमिल है। हजारों वर्षों की परवशता ने हमें कुछ लिखने ही नहीं दिया। जब कुहरा छटा तब हमें अपने गौरवशाली इतिहास का विस्मरण हो चुका था। इसके बाद भी लिखने की जिम्मेदारी उनके हिस्से में आई जिनका दायित्व था कि गौरवशाली इतिहास को सामने लाया जाए।

इतिहास लेखन की परंपरा बाधित थी। ऊपर से मिथ्या लेखन का युग आ गया। इसके चलते दुर्गावती जैसे चरित्र लिखे नहीं गए।

इतिहास ऋणी है तत्कालीन कवियों का जो विचित्र काल में अपनी लेखनी से काल के कपाल पर कुछ श्लोक टाँक गए।

शिलालेखों ने इतिहास की धड़कन बनाए रखी। इस कारण ही दुर्गावती जैसे चरित्र प्रकट हो सके।

गढ़ा राज्य का स्वरूप

भारतवर्ष का हृदय-स्थल है गढ़ा की पवित्र भूमि। सोलहवीं शताब्दी में गढ़ा नाम से विख्यात एक समृद्धशाली राज्य था। इसके पूर्व में रीवा राज्य की सीमा थी, पश्चिम में मालवा, उत्तर में कालिंजर राज्य था। दक्षिण की सीमा निरंतर बढ़ती रहती थी। इन सभी की संस्कृति एक थी, देवी-देवता एक में थे। परंपराएँ एक थीं। आपसी संबंध सुंदर थे। अंतर अकबर के साम्राज्य में आया। कालिंजर और गढ़ा स्वाधीन रहे। शेष अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

गढ़ा राज्य वनाच्छादित भू-भाग था। मध्य में रेवा का कल-कल प्रवाह-पर्वत, पठार, ढाल, गवर, खोह प्रपात की प्रकृति से भरपूर यह भूमि अनुपम है। राजा संग्राम शाह ने

सामरिक दृष्टिकोण से गढ़ निर्माण कराया था। ऐसे भू-भाग को कृषि योग्य भूमि बनाना प्राथमिक आवश्यकता थी।

दुर्गावती का विवाह राजा संग्राम साह के पुत्र दलपति साह के साथ हुआ। गढ़ा राज्य के आय का मुख्य स्रोत कृषि आधारित था। गढ़ा की प्रजा श्रम वीर थी। रानी पाणिग्रहण करके शीतऋतु में आई। तब रबी की फसल तैयार हो रही थी। कुछ दिन ही हुए थे। गढ़ा के आकाश में मेघों ने डेरा डाल दिया। ज़ोरदार बारिश हुई, बाढ़ आ गई। साथ में ओले गिरे। कृषि की भारी क्षति हुई। प्रजा कहने लगी–

कैसी रानी आयी।
साथ में पत्थर पानी लाई।

दुर्गावती को ज्ञात हुआ तो वह उदास हो गई। महाराज ने समझाया जनता की भोली अभिव्यक्ति है। प्रजा आपसे स्नेह रखती है। उसके प्रेम की अटपटी भाषा बहुत-बहुत प्यारी है। रानी मुस्कुराई। रानी की इच्छा का पालन महाराज यत्नपूर्वक करते थे। रानी ने अनुभव किया कि गढ़ा की कृषि दैवाधीन है। शीतवर्षा के अभाव में सूखाग्रस्त भूमि घाटे की खेती बन जाती है, अतः सिंचाई की व्यवस्था जरूरी है। नर्मदा के प्रवाह के बीच खेत प्यासे रह जाते हैं।

राजसभा में इस विषय पर चर्चा की। अधार सिंह ने तालाब योजना की बात रखी। सभी ने स्वीकार किया और गढ़ा में रानीताल बना। देखते-ही-देखते गाँव-गाँव में कृषक तालाव खुदाई करने लगे। राज्य में तालाब योजना चलाई गई। रानी गाँव-गाँव जाकर प्रोत्साहित करती। रामचेरी ने चेरीताल बनवाया। मंत्री आधार सिंह ने अाधार ताल बनवाया। कृषि के अनुकूल वातावरण बन गया। धरती अन्न उगलने लगी। बाँध, तालाब, बावली तथा कूप निर्माण का सिलसिला पूरे राज्य में छा गया। कर के रूप में कृषक सोना देने लगे। गढ़ा के धन-धान्य तथा वैभव से राजे-महराजे जलने लगे। लूटने के लिए आक्रमण होने लगे। रानी ने हर कृषक युवक को सैनिक बनने का मंत्र दिया। श्रमक्रांति और जलक्राति रानी दुर्गावती की प्राथमिकता थी।

कवियों ने गाया–

'उर्वरा सर्वतोभूमि' अर्थात्

गढ़ा राज्य की पूरी धरती उर्वरा हो गई।

एक दिन रानी राज्य भ्रमण को निकली थी। उन्होंने देखा कोई कृषक हल में गाय को जोत रहा है। गौ पूजक रानी सन्न रह गई। वह खेत तक गईं। गाय को मुक्त कराया। मंत्री जी को व्यवस्था करने का आदेश दिया। कृषि के लिए बैलों की व्यवस्था के हेतु पशु मेले का विचार किया। इस प्रकार कृषि के अनुरूप कार्य किए। इसी कड़ी में रानी ने गौ दान की परंपरा प्रारंभ की। हर वर्ष हजार गायों का दान स्वयं रानी करती थी। इस व्यवस्था से कृषि-कार्य में सुगमता आई।

दुर्गावती की एक विशेषता यह थी कि वे प्रवास में रात्रि विश्राम गाँव में करती थीं और वहाँ रुककर किसानों से चर्चा करती थीं। गढ़ा राज्य का किसान तेजस्वी नागरिक बन सका यह रानी का स्नेह और चातुर्य ही था। यही कारण था कि कृषक के आत्मनिर्भर बनने से साम्राज्य वैभवशाली तथा सुरक्षित बन सका।

कृषक ललना सम्मान

रानी का अपनापन प्रजा के लिए औषधि का कार्य करता था जो राज्य को जीवंत स्नेह प्रदान करता रहा। दुर्गावती प्रजा के लिए रानी माँ थी। खेतों में जब फसल शुरू होती वातावरण उल्लास युक्त हो जाता। खरीफ की फसल तो प्रकृति की सुकुमारता और आर्द्रता के बीच अंकुरित होती है। यूँ तो पूरे देश में त्योहार और पर्व कृषि के साथ जुड़े हैं। इन्हें सामयिक गीतों के साथ निर्धारित रागों में गाया जाता है।

गढ़ा की ललनाएँ खेतों में निराई करती हुई सस्वर गीत अलाप रही थीं। रानी भ्रमण को निकली थी। वर्षा के कारण उठी माटी की महक मादक थी। हरे-भरे नन्हे-नन्हे पौधे जैसे धरती माँ के आँचल में मचल रहे थे।

रानी खेत की ओर मुड़ गई। गीत रुक गया। महिलाओं को लगा साक्षात लक्ष्मी खेत में उतर आई हैं। हाथ जोड़कर अभिवादन करने लगीं।

एक वृद्ध महिला ने पूछा। विष्णुदेव की लक्ष्मी लग रही हो। रामचेरी बोली, लग तो लक्ष्मी रही है परंतु है साक्षात दुर्गा। नाम सुनते ही महिलाएँ समझ गईं। हमारी रानी आई है। चरणों में लिपटने लगीं। रानी ने रोका, सब गले लगो। महिलाएँ बोलीं, आपके गीली मिट्टी चिपक जाएगी।

रानी ने कहा, चिपक जाने दो। रानी ने सभी को गले लगाया। सभी को श्रम की पूजा के लिए मोहरों से पुरस्कृत किया। सभी के दृष्टिकोण का विस्तार करना विकास की पहली शर्त है। रानी जानती थी यह कृपा नहीं है राज्य के अस्तित्व की शर्त है।

इन कार्यक्रमों से कृषि उत्तम बन गई थी। उस समय की कहावत थी 'उत्तम खेती मध्यम बान अधम चाकरी भीख निदान'। दुर्गावती के साम्राज्य की कृषि व्यवस्था इन्हीं सब के होते उन्नत थी। शिलालेख में अंकित है–

उर्वरा सर्वतो भूमि मध्येनर्मदानदी।

विज्ञा दुर्गावती रानी गढ़ाराज्ये त्रयोगुणा।

(अर्थात्, पूरी भूमि उर्वर थी। राज्य के मध्य में नर्मदा नदी है। रानी दुर्गावती विख्यात थीं। गढ़ा राज्य में तीनों गुण संपन्न थे।)

संदर्भ ग्रंथ

- वीरांगना रानी दुर्गावती, डॉ. दिनेश मिश्र, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018
- गढ़ा का गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- प्रेरणा पथ, नवंबर-दिसंबर, विद्या भारती, महाकौशल प्रांत, 2017